IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 7, May 2024

वर्तमान समाज की समस्याओं के समाधान हेतु मूल्यों की आवश्यकता–याज्ञवल्क्यस्मृति के विशेष संदर्भ में

डॉ. सुनीता कुमारी व दीपांशी
सह–आचार्या, संस्कृत विभाग, बी. एस. एम. पी. जी. कॉलेज, रूड़की
शोध छात्रा, संस्कृत विभाग, बी. एस. एम. पी. जी. कॉलेज, रूड़की

सारांश–:

वर्तमान समाज में मानव मूल्यों की ओर से विमुख हो रहे हैं, जिससे समाज में द्वेष, अराजकता, नरसंहार जैसी घटनाओं ने जन्म ले लिया हैं। यदि हम इसके मुख्य कारणो पर दृष्टि डाले तो इसके मूल में हमे मूल्य शिक्षाओं का अभाव दिखता है तथा जिसका मुख्य कारण वर्तमान की शिक्षा व्यवस्था है। वर्तमान समाज में मनुष्य अपनी संस्कृति को विस्मृत कर जीवन के मुख्य उद्देश्यों को भूल गया है। हम अपने शास्त्रों के अध्ययन को महत्व नही देते हैं। इतने बहुमूल्य शास्त्र जो कि एक राष्ट्र ही नहीं बल्कि संपूर्ण विश्व के कल्याण हेतु विचारों का सागर है। सर्वज्ञान के भंडार वेद, दर्शन, उपनिषद्, स्मृतियों के अध्ययन को मानव ने अपने जीवन में स्थान नहीं दिया हैं। अधोविवेचित शोध पत्र के माध्यम से याज्ञवल्क्य स्मृति में वर्णित उन मूल्यों के विषय में बताया गया है। जिनके अध्ययन रूपी प्रकाश के माध्यम से मानव अपने जीवन को मूल्यवान बना सकेगा तथा तत्कालीन समाज में फैली समस्याओं का समाधान कि जा सकेगा। प्राचीन भारतीय समाज व्यवस्थित तथा सांस्कृतिक था उस समय समाज में आज की भांति सामाजिक समस्यायें नही थी। यदि मानव समसामयिक समय में भी जीवन को शान्ति पूर्ण तरीके से व्यतीत करना चाहता है तो आवश्यक है कि वह प्रचीन शास्त्रों का अध्ययन कर उनमें उल्लेखित मूल्यों को जीवन में धारण कर अपने जीवन को सुखी बना सकता है। प्रस्तुत शोध–पत्र में याज्ञवल्क्य स्मृति के आधार पर उन मूल्यों का वर्णन किया गया हैं जिनके अध्यापन से मानव–जीवन सरल, सांस्कृतिक व आध्यात्मिक हो सके तथा समाज में फैली कटुता को दूर किया जा सके।

प्रस्तावना–:

भारतीय संस्कृत साहित्य ज्ञानवर्धन तथा जीवन को सरल व सुगम बनाने के लिए मूल्यों की वैश्विक धरोहर हैं तथा आचारणात्मक व आदर्शपूर्ण मूल्यों का भण्डार है। जो कि कई शताब्दियों से निरन्तर धारावत् प्लावित मानव जीवन के प्रत्येक पहलू को अपनी असीम गरिमा व अनन्त प्रासांगिकता से धार्मिक व आध्यात्मिकता की ओर प्रवाहित कर रहे हैं। भारतीय धरातल पर अवतरित वेद वाङमय पूर्व में ही मूल्यों की नींव रख चुके थे। जिसके सहारे पर भारतीय संस्कृति अट्टालिका अपनी पूर्ण गरिमा के साथ स्थापित है। वैदिक वाङमय संपूर्ण संसार का सर्वप्राचीन ग्रन्थ हैं। तत्कालीन युग धार्मिकता तथा मूल्यों से परिपूर्ण था। वेदोंस्मृतिकाल आता हैं। जिन्हे वर्तमान में धर्मशास्त्रीय से जाना जाता है। वर्तमान समय में हो रहे मूल्यों के हास को रोकने हेतु आवश्यक है कि हम अपने प्राचीन ग्रन्थों के अध्ययन की ओर अग्रसर हो तथा उनमें वर्णित मूल्यों का अध्ययन हैं।

श्रुति स्मृति उभयनेत्रे पुराणं हृदयं स्मृतं।
एतत् त्रयुक्त् एव स्याद् धर्मो नऽन्यत्र कुत्र चित्।। (देवी भागवत्,ग्याहरवाँ स्कन्द 1–21)

स्मृति ग्रन्थों में मुख्य रूप से समाज के नियम, सामाजिक व्यवस्था, मानवीय जीवन तथा मूल्यों का वर्णन मिलता है।
स्मृति ग्रन्थों में सर्वप्रथम मनुस्मृति का नाम आता हैं। तत्पश्चात याज्ञवल्क्य स्मृति का नाम याज्ञवल्क्य स्मृति सभी स्मृतियों में महत्वपूर्ण स्थान रखती है। उस समय के सामाजिक, सांस्कृतिक व राजनैतिक मूल्यों का महत्व वर्तमान में भी विशेष रखता हैं। याज्ञवल्क्य स्मृति में वर्णित मूल्यों को अभिव्यक्त करने से पूर्व यह ज्ञात करना आवश्यक है कि मूल्य क्या होते हैं? मूल्य साधरणतः

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 7, May 2024

मनुष्य की जीवन शैली के रूप में उल्लेखित किया जाते है। मनुष्य अपने संपूर्ण जीवन को निर्वाह करने हेतु जिस तरह की जीवन शैली को अपनाता है तथा जिस तरह के व्यवहार को अपनाता है वही उसका मूल्य बन जाता है। परंतु हम यदि समाज के संदर्भ में देखे तो समाज में जिस तरह के नियम, व्यवस्था, परम्पराएं प्रचलित है वही उस समाज के मूल्य को व्यक्त करते हैं। मूल्यवान समाज में अधार्मिकता का अभाव रहता है।

मूल्यों की विभिन्न परिभाषाएं –:

राधाकमल मुखर्जी के शब्दों में–: ''मूल्य समाज द्वारा अनुमोदित उन इच्छाओं और लक्ष्यों के रूप में परिभाषित किये जा सकते हैं जिन्हें अनुबन्धन, अधिगम या सामाजीकरण की प्रक्रिया द्वारा आत्मसात किया जा सकता है और जो व्यक्तिगत, मानकों तथा आकांक्षाओं के रूप में परिवर्तित हो जाते है।''

मूल्य के निर्धारक धर्म, संस्कृति तथा समाज होता है। मूल्यों के विकास मे सामाजिक परंपराये, धार्मिक क्रियाऐं तथा शैक्षिक वातावरण सहयोगी होता है। मूल्य की अन्य परिभाषाओं के माध्यम से मूल्यों को बेहतर तरीके समझा जा सकता है।

परोल के अनुसार–: "इन्होनें मूल्य शब्द को अधिक विस्तृत रूप में दर्शाया है–''मूल्य एक ऐसी अभिप्रेरणा है जो व्यक्ति को विशिष्ट लक्ष्य को प्राप्त करने की ओर प्रयत्नशील बनाये रखती है।''

जॉन डीवी के अनुसार मूल्य की परिभाषा–:"मूल्य का संबंध आन्तरिक रूचियों से होता है जिनका अनुमोदन समाज द्वारा किया जाता है ओर उनकी वस्तुनिष्ठ रूप में परख की जाती है।''

मूल्य किसी भी समाज की सामाजिक व्यवस्था को वर्णित करते हैं। मानव के मूल्य उसके व्यवहार को अभिव्यक्त करते हैं। मूल्य जीवन शैली को व्यवस्थित करते हैं। मूल्य ही मानव व पशु में अन्तर स्पष्ट करते हैं। मूल्य किसी भी व्यक्ति का वह गुण है जिसके मानक एक अच्छे या बुरे समाज को स्थापित करते हैं। मूल्य मानव व्यवहार के शुद्ध निर्धारक हैं।

याज्ञवल्क्य स्मृति के पठन से जिस समाज के दर्शन होते है ,वह समाज, एक व्यवस्थित समाज है। उस समय में नियम–कानूनों को अधिक सुदृढ़ बनाया गया था इसलिए उस समय के समाज में मूल्यों के दर्शन प्रत्येक पहलू पर दिखाई देते हैं। भले ही वह मानव का व्यक्तिगत जीवन हो या सामाजिक व्यवस्था, प्रत्येक क्षेत्र विशेष को मूल्य की आधारशिला पर स्थापित किया है। समाज का निर्माण उसमें निवास करने वाले प्राणियों से बनता है। मानव समाज के सुसंस्कृत तथा धार्मिक बनने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है जिस समाज के व्यक्ति वर्ग धार्मिक, सुन्दर मूल्यों को आत्मसात करने वाला होगा वह समाज उतना ही अधिक समृद्ध होगा। इसलिए सर्वप्रथम साधारण तथा सर्वमान्य मानव मूल्यों का उल्लेख करते है–

मूल्यों को धर्म के शब्दो में भी परिभाषित किया जाता था–

इच्याचारदमाहिंसादानस्वाध्यायकर्मणाम्।

अयं तु परमो धर्मो यद्योगेनात्मदर्शनम्।।(याज्ञवल्क्य स्मृति, आचारध्याय श्लोक सं 8)

सभी मनुष्यों को अपने जीवन को कुछ विशेष मूल्यों को धारण करना चाहिए जो सभी के लिए आवश्यक है नित्य हवन करना, प्रातः–सांय काल को संध्याादि करना, अग्निहोत्र करना, सदैव सदाचार का पालन करना, इन्द्रियों को उनके विषय से दूर रखना, इन्द्रिय संयम करना, किसी के भी प्रति वाचिक, मानसिक या कायिक हिंसा न करना, योग्य पात्र को दान देना, वेदाध्ययन करना । इन का समावेश प्रत्येक मानव को अपने जीवन में करना चाहिए। जीवन के बगीचे को इन मूल्यों के पुष्प से महकाना चाहिए–

अहिंसा प्रथमं पुष्पंमिन्द्रियनिग्रहः।

सर्वपुष्पमं दया भूते पुष्पं शान्तिपिशिष्यते।।(अग्निपुररण 202। 17–16)

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 7, May 2024

इसके अतिरिक्त सभी के लिए सर्वसाधारण मूल्यों का वर्णन किया है–

अहिंसा सत्यमस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः।

दानं दमो दया क्षान्तिः सर्वेषां धर्मसाधनम्।। (याज्ञवल्क्य स्मृति, आचाराध्याय, श्लोक स0 122)

आन्तरिक, बाह्य शौच अर्थात शरीर के साथ–साथ विचारों में भी शुद्धता होनी चाहिए। ग्याहर इन्द्रियों पर संयम, जीविका योग्य दान आदि।

सामाजिक मूल्य–:

सामाजिक मूल्य वह होते हैं जिनका अध्ययन करने से किसी समाज की व्यवस्था का ज्ञान होता हैं। सामाजिक नियम व मान्यताऐं जिन के माध्यम से समाज परिवर्तन की ओर अग्रसित होता है। समाज का आधार सामाजिक मूल्य हैं जो समाज के पहचान के रूप में वर्णित होते है क्योंकि समाज की पहचान उसकी परंपराएं संस्कृति, रीति–रिवाज होते है एवं वही उसके मूल्य कहलाते है। स्मृति ग्रन्थ क्योंकि हिन्दू समाज पर आधारित ग्रन्थ है इसलिए इस में हिन्दूओं के तत्कालीन नियमों का उल्लेख है। याज्ञवल्क्य स्मृति के समय समाज में कौन–कौन से सामाजिक मूल्य थे। इसका वर्णन हमें इसके अध्ययन से ज्ञात होता हैं। सर्वप्रथम विवाह से संबंधित विचारों पर दृष्टि डाले तो उस समय में आठ प्रकार के विवाह का वर्णन हैं परन्तु सामाजिक मान्यता केवल चार प्रकार के विवाह को ही प्राप्त थी जो कि माता–पिता की उपस्थिति में होते थे।

ब्रह्मो विवाह आहूय दीयते शक्त्यालंकृता।

तञ्जः पुनात्युभयतः पुरूषानेकविंशतितम्।।

यज्ञस्थ ऋत्विजे दैव आदायार्षस्तु गोद्वयम्।

चतुर्दश प्रथमजः पुनात्युत्तरजश्च षट्।।

इत्युक्त्वा चरतां धर्मं सह या दीयतेऽर्थिने।

स कायः पावयेत्तञ्जः षड् षड्वंश्यान्सहात्मना।।

आसुरो द्रविणादानादगान्धर्वः समयान्मिथः।

राक्षसो युद्धहरणात्पैशाचः कन्याछलात्।। (याज्ञ0आचार0 विवाहप्रक0श्लोक स0 58,59,60,62)

अंतिम चार प्रकार के विवाह को समाज में हेय दृष्टि से देखा जाता था क्योंकि इन विवाह में माता–पिता की अनुमति नही दी जाती थी। वर्तमान में भी कदाचित् ऐसे विवाह का प्रसंग देखने में मिल जाता है परन्तु वर्तमान में इस प्रकार बल पूर्वक विवाह करने पर संविधान में दण्ड का प्रावधान है। गान्धर्व विवाह को संविधान मे मान्यता प्रदान है। इन विवाह के दर्शन अन्य ग्रन्थों में मिलते है। संविधान के अनुच्छेद 21 में निर्देशित है कि मानव को स्वयं के जीवन व व्यक्तिगत स्वंतन्त्रता का अधिकार प्रदान करता है इसके अंतर्गत व्यक्ति अपने पसंद के व्यक्ति के साथ विवाह कर सकता है।

सपिण्ड या सगोत्र विवाह उस समय में निषेध था जिसका पालन वर्तमान समाज द्वारा भी किया जाता है। संविधान में सपिण्ड विवाह को लेकर कुछ नियम है यदि सपिण्ड में विवाह करने वाला व्यक्ति उन नियमों की पूर्ति करता है तो वह उसे अपने गोत्र में विवाह कर लेने की स्वीकृती प्राप्त है। हिन्दु विवाह अधिनियम 1995 धारा 5 के तहत सपिण्ड विवाह पर रोक लगा दी गई थी। इस विवाह पर रोक लगाने के वैज्ञानिक कारण भी रहे होगे। कुछ रोग वंशानुगत रूप मे एक पीढ़ी से दूसरी पीढी को हस्तांतरित हो जाते है यदि सगोत्र में विवाह किया जाये तो वे रोग आगे आने वाली पीढ़ी में भी अग्रसरित हो जाते है।

विवाह अपनी वंश परंपरा को आगे बढ़ाने का एक साधन भी होता था। उस परंपरा को बारह प्रकार के पुत्रों के द्वारा बढ़ाया जाता था। उस समय पुत्रों के बारह प्रकार के भेद बताये गये थे। उन सभी पुत्रों का संपत्ति में अधिकार तथा पिण्ड दान करने का भी अधिकार था। समाज में सभी को समान रूप से सम्मान प्राप्त था।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 7, May 2024

समाज का निर्माण परिवारों के द्वारा ही होता है। पारिवारिक नियम, रश्में, संबंध या जीवन शैली यही पारिवारिक मूल्यों का निर्माण करते हैं। प्राचीन समय में संयुक्त परिवार की अवधारणा थी परन्तु परिवर्तित होती परिस्थितियों के कारण एकल परिवार का विचार हमारे समाज में फलित हो गया है। स्मृति काल में संयुक्त परिवार में मानव अपना जीवन यापन करते थे।

पारिवारिक मूल्य–:

संयुक्त परिवार में रहकर सभी मनुष्य अपने दुःख–सुख को साझा करते थे। गृहरूथ आश्रम को हमारे ग्रन्थों में सर्वोपरि आश्रम का स्थान दिया गया है। गृहस्थी के लिए निर्देश दिये गये है कि गृहस्थी अपने परिवार में पति, सास–ससुर, भाई, माता–पिता, मामा आदि सभी से बिना वैर किये रहे। ऐसे करने से गृहस्थी सभी लोकों पर विजय प्राप्त करता है।

परिवारिक मूल्य में अपने पितरों के प्रति श्रद्धा तथा अपने दायित्व का पालन करने के लिए परिवार जनों के द्वारा श्राद्ध तर्पण किया जाता है जिसका निर्वाह वर्तमान के समय में प्रत्येक परिवार करता है। याज्ञवल्क्य स्मृति के श्राद्ध प्रकरण में इसकी विधि तथा महत्ता वर्णन है। अपने पितरों के प्रति श्राद्धा को प्रकट करते हुए ब्राह्मणों को दान देना ही श्राद्ध कहलाता है। श्राद्ध के विषय में याज्ञवल्क्य स्मृति में कथित है–

कर्मनिष्ठास्तपोनिष्ठाः पञ्चाग्निर्ब्रह्मचारिणः।

पितृमातृपराश्चैव ब्राह्मणाः श्राद्धसंपदः।।(याज्ञ0 आचार0 श्राद्ध प्रकरण, श्लोक स0 221)

श्राद्ध के फल का वर्णन करते हुए स्मृति में कहा गया है कि श्राद्ध करने की तिथि प्रतिपदा कृष्णपक्ष की है, केवल चतुदर्शी को छोडकर अमावस्य तक श्राद्ध करने वाले को क्रमशः कन्या, सत्पुत्र, अच्छी कृषि, ब्रह्म के समान तेजस्वीता, बहुमूल्य रत्न, श्रेष्ठ जाति, सभी कामनाओं की पूर्ति, ये सभी प्राप्त हो जाता है। चतुदर्शी को केवल उन्ही लोगों का श्राद्ध किया जाता है जो शस्त्र से मारे गये हो।

कन्यां कन्यावेदिनश्च पशुन्वै सत्सुतानपि।
द्यूतं कृषि वणिज्यां च द्विशफैकशफांस्तथा।।
ब्रह्मवर्चस्विनः पुत्रान्स्वर्णरूप्ये सकृप्यके।
ज्ञातिश्रैष्ठयं सर्वकामानप्राप्नोति श्राद्धदः सदा।।
प्रतिपत्प्रभृतिष्वेकां वर्जयित्वा चतुर्दशीम्।
शस्त्रेण तु हता ये वै तेभ्यस्तत्र प्रदीयते।। (याज्ञ0 आचार0 श्लोक स0 262,263,264)

वर्तमान में भी श्राद्ध कराने के लिए ब्राह्मण को आंमत्रित किया जाता है। यही मूल्य तत्कालीन समय से हमारे समाज के मूल्य में भागीदारी दे रहे है तथा हमारे समाज को धार्मिक बनाने में सहयोग कर रहे है।

समानता का पालन करते हुए परिवार में संपत्ति का विभाजन होता था। परिवार के सभी सदस्यों को समान रूप से सभी अधिकार प्राप्त हो, प्रत्येक सदस्य के साथ न्याय हो, इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है। इसको ध्यान में रखते हुए दाय भाग के अंतर्गत संपत्ति विभाजन के मानकों का निर्धारण बहुत ही विचार पूर्वक किया गया है। याज्ञवल्क्य स्मृति में संपत्ति विभाजन को यह ध्यान में रखकर विभाजित किया गया है जिससे प्रत्येक सदस्य के साथ समान रूप से न्याय हो। माता–पिता अपनी संपत्ति का विभाजन प्रत्येक संतान के समक्ष सम्यक् व समान रूप से करते थे।

विभागं चेत्पिता कुर्यादिच्छया विभेजन्सुतान्।
ज्येष्ठं वा श्रेष्ठभागेन सर्वे वा स्युः समांशिनः।। (याज्ञ0 व्यवहार0 दायभाग0 श्लोक स0114)

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 7, May 2024

अर्थात पिता धर्मपूर्वक स्वयं की इच्छा से जिस पुत्र को जितना भी हिस्सा अपनी संपत्ति में से देता है वह अपरिवर्तनीय होता था। पिता धर्मपूर्वक अपनी धरोहर को पुत्रों में विभाजित करें। ज्येष्ठ पुत्र को ज्येष्ठ भाग, मध्यम को मध्यम भाग तथा कनिष्ठ पुत्र को छोटा भाग दे। सभी में समान रूप से विभाजन करे। पिता की मृत्यु के पश्चात माता को भी संपत्ति में बराबर का भाग दिया जाता है। माता का ऋण व धन माता के पश्चात पुत्रियां आपस में विभाग ले। यदि सभी भाईयों के विवाह आदि संस्कार संपन्न नहीं हुए हैं तो श्रेष्ठ भाई का दायित्व बनता है कि जिन भाईयों के संस्कार नही हुए है एवं जिनके संस्कार हो चुके है वे सभी भाई अपनी संपत्ति में से समान हिस्सा देकर बाकी भाईयों के संस्कार कराये। यही प्रेम भाव तथा एक–दूसरे के प्रति अपने उत्तरदायित्व का निर्वाह निःस्वार्थ भाव से करना यही पारिवारिक मूल्य परिवारों को जोड़े रखते हैं जो कि वर्तमान समाज में एकल परिवार जीवन शैली को प्रेम–भाव का दर्पण दिखाता है।

सांस्कृतिक मूल्य–:

संस्कृति देश या राष्ट्र की पहचान होती है। संस्कृति जैसे कि वहां के त्यौहार, त्यौहारों को मनाने की विधि, प्रसिद्ध नृत्य, भोजन, वस्त्र, व्यवहार आदि सभी किसी भी राष्ट्र के मूल्य को निर्धारित करते है। याज्ञवल्क्य स्मृति में इस विषय मे कुछ विशेष नही कहा गया है। परन्तु भक्ष्य व अभक्ष्य प्रकरण में भोजन संबंधी बातों का उल्लेख किया गया है। जिस भोजन का तिरस्कार कर दिया गया हो, जिस भोजन मे केश या कीड़ा लग गया हो, बनाने के पश्चात काफी समय तक रखा हुआ भोजन, जो भोजन लवण से युक्त हो गया हो, कुत्ता के द्वारा या किसी भी पशु या पक्षी के द्वारा झूठा भोजन, किसी के द्वारा पैर से छुआ भोजन खाने योग्य नही होता है।

षोडश संस्कार हमारे प्राचीन मूल्यों का हिस्सा है। वैदिक काल से ही भारतीय समाज का हिस्सा है। हमारे पूर्वजों तथा ऋषियों के द्वारा इनका पालन किया गया है। बालक के संस्कार जन्म से पूर्व ही शुरू हो जाते है, ताकि भारतीय मूल्य जीवित रहे तथा हमारी संस्कृति की सुन्दरता तथा महानता में अपना स्थान निर्धारित करें। वर्तमान में भी इन संस्कारों को व्यवहार में लाया जाता है। जन्म से लेकर मृत्यु तक हमारे संस्कार ही हमें जीवित रखते हैं। इन संस्कारों के महत्व को दर्शाते हुए कहा गया है कि जन्म से पूर्व किये गये संस्कार जन्म के साथ आये हुए रोगों को नष्ट करते है तथा जन्म के बाद के संस्कार मनुष्य के आने वाले जीवन में के दुःख व रोगों को दूर करती है। स्त्री के संस्कार बिना मंत्र के होते थे। माता के गर्भ से प्रथम जन्म परंतु उनका दूसरा जन्म इन संस्करों के द्वारा होता है उसके पश्चात ही वर्णों में पैदा होने वाले प्राणी द्विज कहलाते हैं।

मातुर्यदग्रे जायन्ते द्वितीयं मौञ्जिबन्धनात्।

ब्राह्मणक्षत्रियविशस्तस्मादेते द्विजाः स्मृताः।। (याज्ञ0 आचार0 श्लोक स0 39)

यही बात इस श्लोक के द्वारा कही गयी है। **"जन्मना जायते शुद्रः संस्कारद्द्विज उच्यते"** संस्कार ही मनुष्य को पशुओं से अलग करता है, यही मूल्य हमारी पहचान को जिंदा रखते है। सांस्कृतिक मूल्य किसी भी समाज की परंपराओं का दर्पण होते है। हमारी संस्कृति में गुरू को परमात्मा से भी उच्च स्थान प्राप्त है। गुरू के द्वारा कराये गये उपनयन संस्कार से ही मनुष्य को दूसरे जन्म की प्राप्ति होती है। गुरू का महत्व सर्वाधिक होता है। इसीलिए ब्रह्मचारी को नित्य गुरू की सेवा करने का आदेश दिया है। गुरू की आज्ञा के बिना कोई भी कार्य न करे, गुरू के उठने से पहले अपने शय्यासन का त्याग करें, सदैव गुरू के चरणों का अनुगमन करें, गुरू के द्वारा बतायी गयी प्रत्येक बात को ध्यान से सुने, नित्य उनका मन, वचन, कर्म के द्वारा अभिवादन करें।

गुरू के अतिरिक्त जो भी आयु, ज्ञान आदि में वृद्ध हो उनका नित्य ही अभिवादन करना चाहिए। उससे मनुष्य के ज्ञान, आयु, यश, बल में वृद्धि होती है। चूकिं इस समय में नमस्कार करने की परंपरा का हास हो रहा इसलिए आवश्यक है कि हम अपनी वर्तमान पीढ़ी को नमस्कार करने का महत्व समझाये जो कि मनुस्मृति में वर्णित किया गया है–

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 7, May 2024

अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः।

चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्या यशोबलम्।। (मनुस्मृति द्वितीय अध्याय)

इसके के अतिरिक्त गुरू को सर्वोपरि स्थान प्रदान करते है यह श्लोक में वर्णित किया गया है कि–

देवो रूष्टे गुरूस्त्राता गुरो रूष्टे न कश्चनः।

गुरूस्त्राता गुरूस्त्राता गुरूस्त्राता गुरूस्त्राता न संशयः।।

यही हमारे सांस्कृतिक मूल्य कहलाते हैं। जो कि हमारे समाज का आधार है एक समाज में हर तरह के व्यक्ति निवास करते हैं। प्रत्येक व्यक्ति के व्यक्तिगत मूल्य एक सांस्कृतिक समाज के निर्माण में सहायक होते हैं। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति सांस्कारिक हो यह आवश्यक है।

राजनैतिक मूल्य–:

राजनैतिक मूल्य वो होते जो समाज में न्याय, समानता, समरसता आदि को स्थापित करते हैं। किसी भी राष्ट्र की न्यायिक, शासनिक, प्रशासनिक, राजनैतिक व्यवस्था ही राजनैतिक मूल्य कहलाते हैं। स्मृति कालीन राजनैतिक व्यवस्था राजतंत्रिक व्यवस्था थी। उस समय राजा का शासन हुआ करता था। वंश परंपरा से ही राजा हुआ करते थे। राजा की शासन प्रणाली के सात अंग होते थे तथा शासन व्यवस्था को सुचारू रूप से चलाने हेतु चार प्रकार के उपायों का वर्णन किया गया है–

उपायाः साम दानं च भेदो दण्डस्तथैव च।

सम्यक्प्रयुक्ताः सिद्धयुर्दण्डस्त्वगतिका गतिः।। (याज्ञ0आचार0 श्लोक स0 347)

अथार्त किसी भी वाद को सुलझाने के लिए सर्वप्रथम प्रेम पूर्वक भाषण करके, कुछ सुवर्ण आदि दान देकर, दुश्मन के सामन्त, मंत्रियों, सैनिकों में फूट डालकर अपनी विजय को निश्चित करे, यदि इन उपायों से भी विजय प्राप्त न हो तो अन्त में दण्ड की नीति को अपनाये। परंतु इन सभी उपायों का प्रयोग देश, काल व परिस्थिति के अनुसार राजा को करना चाहिए। वर्तमान में भी किसी भी राष्ट्र के साथ समझौता करने या विवाद को सुलझाने के लिए यही नीति अपनाई जाती है परंतु अब राजतंत्र के स्थान पर प्रजातंत्र है। उस समय कर आदि की व्यवस्था भी थी। राजा प्रजा से उनके भरण पोषण हेतु उनकी संपत्ति का छठा भाग उनसे ग्रहण करता था। इसका वर्णन हमे अभिज्ञानशाकुन्तलम् में भी प्राप्त होता है। जब राजा दुष्यन्त स्वयं के सारथि से महर्षि कण्व के आश्रम में प्रवेश करते समय वार्तालाप करते है और उससे कहते है कि प्रजा से तो हम उनके कल्याणार्थ षष्ठ भाग को ही उनसे ग्रहण करते है परन्तु ये महर्षि हमे अपनी तपस्या का कभी न नष्ट होने वाला फल कर के रूप में हमारी रक्षा हेतु प्रदान करते है जो कि सदैव विपत्तियों से राष्ट्र की रक्षा करते है।

राजा के उत्तरदायित्व को कौटिलीय अर्थशास्त्र में बहुत ही सुन्दर व साधारण वचनों में व्यक्त किया है–

प्रजासुखे सुखं राजाः प्रजानां च हिते हितम्।।

नात्मप्रियं हितं राज्ञःप्रजानां तु प्रियं हितम्।।(कौटिलीय अर्थशास्त्र,प्रथम अधि0 प्रकरण 15)

कर व्यवस्था को प्रजा की जीविका के अनुरूप भी ग्रहण किया जाता था यदि किसी व्यक्ति की जीविका इतनी नही है कि वह यह कर न दे पाये तो उससे कम या किसी कार्य को उसके द्वारा संपन्न कराकर कर को ग्रहण किया जाता था। राजा प्रजा मे कुछ विवाद हो जाता है तो उसका समाधान करने हेतु तीन प्रकार के साक्ष्यों को प्रस्तुत किया जाता था। लिखित, भुक्ति, प्रमाण। लिखित अर्थात यदि कोई लिखित में उस विवाद से संबंधित लेख हो, जिसने उसको भोगा हो सा फिर किसी व्यक्ति द्वारा उस घटना का साक्षात् देखा गया हो। इन्ही तीनों के आधार पर वाद का निर्णय किया जाता है। पक्ष व विपक्षी दोनों के मत को उनके नाम के सामने जैसा उनके द्वारा वर्णन किया गया है वैसा ही लिखा जाता था। दोनो पक्षों में से जो भी सही तथ्यों को

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 7, May 2024

साक्ष्यों के द्वारा अपने मत को सत्य साबित करने मे सफल हो जाता था उसी पक्ष की जीत होती थी। इसी व्यवस्था से स्मृतिकाल मे वाद–विवादों का निर्णय किया जाता था। इसी तरह की न्यायिक व्यवस्था वर्तमान प्रणाली मे भी है इससे समाज में समानता का मूल्य साक्षित रहता था। सभी को अपने पक्ष को प्रस्तुत करने का समान अवसर दिया जाता था। ताकि समाज में अराजकता न फैले, सभी का समान रूप से न्याय की प्राप्ति हो। अनुचित कार्य करने या ऐसा कार्य जिससे राष्ट्र को अपमानित होना पडे या समाज में अधर्म को बढ़ावा मिले ऐसा कार्य करने पर दण्ड का विधान था। साधारण व्यक्ति ही नही अपितु राजा के परिवार में से भी कोई ऐसा कार्य करता था तो वह भी दण्ड का भागी होता था। समानता को आधार बनाकर ही नियम–कानूनों का निर्माण किया गया था। नियमों का उल्लघंन करने पर दण्ड का प्रावधान भी था। दण्ड के विषय में याज्ञवल्क्य स्मृति में मनुस्मृति का अनुसरण किया है। दण्ड के प्रावधान को इस प्रकार समझा जा सकता है कि यदि कोई व्यक्ति किसी भी अन्य व्यक्ति पर झूठा आक्षेप लगाता है तो आक्षेप लगाने व्यक्ति पर उत्तम साहस का दण्ड लगाया जाता है, यदि किसी जाति या समुदाय पर आक्षेप लगाता है तो मध्यम साहस के दण्ड का भागी होता है, गांव या देश पर आक्षेप लगाने पर अधम साहस का दण्ड दिया जात है।

आध्यात्मिक मूल्य–:

आध्यात्मिक मूल्य राष्ट्र में धार्मिकता को बनाते है। आध्यात्म का संबंध आत्मज्ञान से होता है। जिस व्यक्ति को आत्मज्ञान हो जाता है वह व्यक्ति धन, संपत्ति, परिवार आदि का त्याग कर , दुःख, सुख का त्याग कर देता है तथा उस परमात्मा की खोज में निकल जाता है। साधना के द्वारा परमात्मा का साक्षत्कार कर अपने जीवन को सफल बना लेते है। आध्यात्मिक व्यक्ति भी समाज को उन्नत बनाने में अपनी भागीदारी निभाता है। याज्ञवल्क्यस्मृति के प्रायश्चित अध्याय आध्यात्म से संबंधित बातो के विषय में ही चर्चा करता है। आध्यात्म मनुष्य ही नही अपितु संपूर्ण राष्ट्र के उद्धार में भागीदार है। सर्वप्रथम सृष्टि की उत्पत्ति संबंधित क्रम को वर्णित करते हुए कहा है कि ब्रह्म, सर्वव्यापक, अनादि, अन्नत आकाश, निरन्तर प्रवाह से प्रवाहित होने वाली तथा सबको प्राण देने वाली वायु, तेज, निश्छल धारा से बहने वाला जल व सब प्राणियों का आश्रय देने वाली पृथ्वी इनसे ही मनुष्य शरीर रूपी वस्त्र को धारण करते है। ये पांच धातु संसार में दृष्टवान है यही ज्ञानमय आत्मा है, इन्ही पंच तत्वो तथा आत्मा से संसार का उद्भव हुआ है–

ब्रह्मखानिलतेजांसि जलं भूश्चेति धातवः।

इमे लोका एष चात्मा तस्माच्च सचराचरम्।। (याज्ञवल्क्य स्मृति)

संपूर्ण सृष्टि की उत्पत्ति में आत्मा ही सहायक हैं। जो व्यक्ति इस शरीर को सदैव रहने वाला समझता हैं। आत्मा के स्वरूप का जिसे ज्ञान नही होता हैं। वह सदैव इसी भ्रम में जीवन को जीता हैं कि यह अमुक व्यक्ति मेरा पुत्र हैं, ये मेरे परिवार के लोग है, मैं इनकी हूँ। हित व अहित के भावों में उसकी बुद्धि सदैव विपरीत दिशा में रहती हैं।

मुक्ति जैसे अव्यक्त विषय पर भी याज्ञवल्क्य ऋषि ने अपने बहुमूल्य विचारों के द्वारा स्मृति की महत्ता को अधिक विस्तृत कर दिया हैं। उनके अनुसार इस संसार में आगमन के चक्रव्युह से निकले के लिए एक ही मार्ग हैं। जो व्यक्ति निरन्तर अपने गुरू की सेवा में तत्पर रहता है, वेदादि शास्त्रों का अर्थ सहित धारण करता है तथा अपने जीवन में उतारता है सत् कर्मों को अपनाता है, सभी प्राणियों के प्रति समान दृष्टि रखता है, स्वयं व पर के भेद के परदे को अपनी दृष्टि से दूर रखता है, इन्द्रियों का अपने वश में रखता है, शब्द, रूप, रस, गंध, स्पर्श से दूर रखता है, आलस्य का त्याग कर, सभी प्रकार की प्रवृत्तियों का अवरोध कर, इच्छा, द्वेष, राग को त्यागकर , पाप–पुण्य का विचार करता है, तमो व रजो गुण से निवृत्त अपितु केवल सत्व गुण से युक्त रहता है वही ज्ञानी पुरूष मुक्ति रूपी अमृतत्व की प्राप्ति कर मुक्त हो जाता है। जीवन के जन्म–मरण के चक्र से छूट जाता है।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 7, May 2024

निष्कर्ष–:

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि मूल्य किसी भी राष्ट्र की आधारशिला है जिसका मजबूत होना आवश्यक है। किसी भी भवन का निर्माण करने से पूर्व उसकी नींव रखी जाती है, क्योंकि संपूर्ण भवन को नींव ही टिका कर रखती है। इसी के कारण से भवन सदियों तक अपने वजूद को जिंदा रखता है। उसी प्रकार राष्ट्र भी मूल्यों के ऊपर स्थापित एक भवन है। मूल्य पहचान के रूप प्रत्येक समाज को विशेष महत्व प्रदान करते है। इन्हीं मूल्यों का दर्शन प्रस्तुत शोधपत्र के द्वारा कराया गया हैं। मूल्यों का संबंध समाज के प्रत्येक पहलू से है। राष्ट्र के सर्वागींण विकास हेतु आवश्यक है कि राष्ट्र के प्रत्येक हिस्से को मूल्यों के दर्पण में देखा जाये। इसीलिए प्रस्तावित शोध पत्र में प्रत्येक मूल्यों का वर्णन किया गया है। सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक व आध्यात्मिक। समाज को आध्यात्मिक, धार्मिक बनाने में तथा वर्तमान में हो रहे मूल्यों के हास को रोकने हेतु व मूल्यों के हास से उत्पन्न समस्याओं के निवारण के लिए स्मृतियों का अध्ययन आवश्यक है।

संदर्भ–ग्रन्थ सूची

[1]. आचार्य प0 श्रीराम, यजुर्वेद संहिता (सरल हिन्दी व्याख्या) युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट गायत्री तपोभूमि मथुरा, संस्करण, पुनरावृत्ति 2010

[2]. अग्नि पुराण, अठारवां पुनर्मुद्रण गीता प्रेस गोरखपुर, सं0 2076

[3]. दुबे, डा0 सत्यनारायण, मूल्य शिक्षण, प्रकाशन, शारदा पुस्तक भवन पब्लिशर्स एवं डिस्ट्रीब्यूटर्स 11 यूनिवर्सटी रोड़, इलाहबाद–2, प्रथम संस्करण' 2007–8

[4]. डा0 राय गंगासागर, याज्ञवल्क्य स्मृति चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, पुनः मुद्रित संस्करण 2011

[5]. डा0 उमेशचन्द्र पाण्डेय, याज्ञवल्क्यस्मृति, चौखम्बा संस्कृत संस्थान वाराणसी, संस्करण–वि0सि 2050

[6]. डा0 सुरेन्द्र कुमार, मनुस्मृति, आर्ष साहित्य प्रचसत्रार ट्रस्ट 455, खारी बावली, दिल्ली, परिवर्धित व परिष्कृत संस्करण , सन् 2005

[7]. शर्मा. आर.ए, मानव मूल्य एवं शिक्षा, प्रकाशन– लेजर टाईपिंग तथा सेंटिग, श्री गणेश कम्प्यूटर्स जी0 25, कृष्णा प्लाजा गढ़ रोड़, मेरठ, संस्करण 2008

[8]. श्री श्रुत प्राणनाथ विद्यालंकार, कौटिल्य अर्थशास्त्र, मोतीलाल बनारसीदास,पंजाब संस्कृत पुस्तकालय,लाहौर, 1923

[9]. पाण्डित रामतेज, देवीभागवतम्, चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, दिल्ली